International Journal of Home Science 2020; 6(3): 91-93

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(3): 91-93
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 25-07-2020
Accepted: 27-08-2020

डॉ. माण्डवी कुमारी
सहायक शिक्षिका सामाजिक विज्ञान, उच्च विद्यालय, टभका, विभूतिपुर, समस्तीपुर, भारत

Corresponding Author:
डॉ. माण्डवी कुमारी
सहायक शिक्षिका सामाजिक विज्ञान, उच्च विद्यालय, टभका, विभूतिपुर, समस्तीपुर, भारत

ग्रामीण परिवेश में बच्चो के व्यक्तित्व विकास में माता पिता एवं शिक्षा व्यवस्था का प्रभाव (COVID-19 के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. माण्डवी कुमारी

सारांश
वर्ष 2011 की जनगणना अनुसार बिहार राज्य की कुल आबादी का 46 फीसदी हिस्सा बच्चो का है जो की सम्पूर्ण भारत देश में उच्चतम अनुपात का निर्धारण करते हैं। भारत के अन्य राज्यों की तुलना में बिहार राज्य में प्रति 1000 लोगो पर 58 बच्चो का जन्म होता है जबकि भारत देश की बात करे तो यह अनुपात प्रति 1000 लोगो पर जन्म लेने वाले बच्चो की संख्या 50 है। [7] अतः इस अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण क्षत्रो के बालको में व्यक्तित्व निर्धारण में माता पिता एवं शिक्षा व्यवस्था के प्रभाव की समीक्षा करना है। Covid-19 से प्रभावित ग्रामीण क्षेत्र में बच्चो के विकास क्रम में अभिभावकों एवं शिक्षा के प्रभावों का आंकलन करने हेतु भारत सरकार एवं संयुक्त राष्ट्र संघ के आंकड़ों को आधार बनाया है भारत की अधिकतर आबादी ग्राम आश्रित है अतः बच्चो के व्यक्तित्व विकास की समस्या का अध्ययन करना बेहद प्रभावशाली सिद्ध होगा

कुटशब्दः व्यक्तित्व विकास, COVID-19, बाल विकास, संवेगात्मक विकास, गाल्टन, बीयरस्टेट, स्टेनले हॉल

प्रस्तावना
बालक का विकास भ्रुण अवस्था से ही प्रारम्भ होता है और विकास का यह क्रम जीवनपर्यन्त चलता रहता है।

इस बीच यह कई आयामों से होकर गुजरता है। प्रत्येक आयामी स्तरों पर बालको में विशेष को परिवर्तन जन्म लेते है जिनसे उनके मानसिक ए शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास को समझा जा सकता है। बाल विकास के इसी क्रम के समानांतर बाल व्यक्तित्व की धारणा भी चलती है। [1]

व्यक्तित्व आधुनिक मनोविज्ञान का बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रमुख विषय है। जब गाल्टन [2], ने पहली बार अपनी पुस्तक (Hereditary Genius), में वैयक्तिक भिन्नता की घोषणा की। उसी समय इसका अध्ययन प्रारंभ हुआ। उसने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति में कुछ ऐसी विशेषताएँ होती हैं जो दूसरों में नहीं होती फलतः प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है। अतः 'व्यक्तित्व' शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता को इंगित करता है, जिसे सभी व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने तथा पारस्परिक संबंधों की दृष्टि से विशेष महत्व देते हैं। [3]

बीयरस्टेट (1970) के अनुसार, ''व्यक्तित्व कभी बना–बनाया नहीं आता है।'' किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास में समाजीकरण की सबस` प्रमुख भूमिका होती है। लोगो ं को यह नहीं सोचना चाहिए कि व्यक्तित्व का विकास कोई जैविक प्रक्रिया है। व्यक्तित्व जन्म से ही अपने गुणो ं को प्राप्त नहीं करता है, बल्कि माता–पिता, परिवार एव ं समाज के सदस्य के रूप में वह धीरे–धीरे अर्जित करता [6]

इस अध्ययन में भी ग्रामीण परिवेश के बच्चो के व्यक्तित्व निर्धारण में सम्मिलित स्रोतों का अध्ययन शामिल हैं।

अध्ययन के उद्देश्य
- ग्रामीण परिवेश में COVID-19 के दौरान बच्चो के व्यक्तित्व निर्धारण में माता पिता की स्थिति का अध्ययन
- ग्रामीण बच्चो में COVID-19 के दौरान शिक्षा समबन्धी समस्याओ का उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन

अध्ययन विधि
इस अध्ययन में सार्थकता की दृष्टि से प्रारंभिक आंकड़ों तथा द्वितीयक आंकड़ों के रूप में भारत सरकार, बिहार सरकार संयुक्त राष्ट्र संघ तथा बाल विकास के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो के अध्ययन

के द्वारा जारी डेटा एवं रिपोर्ट्स का उपयोग किया गया है। वर्तमान शोध का संबंध बाल विकास की घटनाओं के अध्ययन पर आधारित है। ग्रामीण परिवेश के बच्चो को अध्ययन के अन्तर्गत रखा गया है। इस शोध का स्वरूप वर्णात्मक होने के साथ तुलनात्मक है। तथ्यों को एकत्रित करके उसके विश्लेषण करके उद्धित तथ्यों को उजागर करना । वर्तमान शोध विवरणात्मक, अवलोकन एवं विश्लेषणात्मक पद्धतियों के वैज्ञानिक सूत्रों, तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण करके परिणामों का प्रस्तुतीकरण है।

विश्लेषणात्मक व्याख्या

1. ग्रामीण परिवेश में ब्वअपक के दौरान बच्चो के व्यक्तित्व निर्धारण में माता पिता की स्थिति का अध्ययन

मनोवैज्ञानिक स्टेनले हॉल के अनुसार किशोरावस्था प्रबल दबाव तनाव तूफान व संघर्ष का काल है [8]

मनोवैज्ञानिक बालक के व्यक्तित्व विकास में वातावण को मत्वपूर्ण मानते है। जहा बच्चे का शारीरिक विकास हो रहा है उसी समय उस स्थान पर उसका मानसिक विकास भी हो रहा है इसलिए उनकी सोच व्यवहार एवं संवेदनाओ का वातावरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है

जब घर के लोगो को बच्चा गुस्सा या हिंसक व्यवहार करते देखता है तो यह उसके मस्तिष्क में समाहित हो जाता है और फिर वह स्वयं भी गुस्सा, आवेश, गलत भाषा तहत हिंसक व्यवहार को अपना स्वभाव मान लेता है

व्यक्तित्व एक एकछत्र मनोवैज्ञानिक अवधारणा होती है तथा किसी भी बालक के व्यक्तित्व विकास में उसके माता पिता एवं पारिवारिक वातावरण का सापेक्ष योगदान होता है। बालक अपने आस पास जो देखता है उसके जैसा व्यवहार करने की प्राय कोशिश करता है जिसके परिणामस्वरूप उसके व्यक्तित्व में परिवर्तन आते रहते हैं।

COVID-19 से ग्रामीण आबादी में अधिकतर मजदुर वर्ग प्रभावित हुआ है। जिससे उनकीं पारिवारिक समस्याएँ बढ़ी है। माता पिता को अधिक संघर्ष करते हुए देखना या तनाव में देखना बालक के व्यवहार को प्रभावित करता है

बच्चो के समक्ष माता पिता का परस्पर व्यवहार भावनात्मक रूप से कमजोर बालक पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है इससे बच्चे में नकारात्मक भावनाये पैदा रहा है और बच्चा असुरक्षित महसूस करने लग जाता है। कई मनोवैज्ञानिक इस तथ्य को अपने पूर्व के प्रयोगो द्वारा सिद्भ कर चुके है।

2. ग्रामीण परिवेश में बच्चो की शिक्षा प्रणाली पर COVID-19 महामारी का प्रभाव

संयुक्त राष्ट्र (United Nations) की एक हालिया रिपोर्ट के अनुसारए कोरोना वायरस (COVID-19) के आर्थिक परिणामों के प्रभावस्वरूप अगले वर्ष लगभग 24 मिलियन बच्चों पर स्कूल न लौट पाने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

कोविड–19 महामारी के कारण शहरी क्षेत्रों में शिक्षकों तथा छात्रों में ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग बढ़ रहा है परन्तु ग्रामीण परिवेश में बच्चे शिक्षा व्यवस्था में भाग नहीं ले पा रहे हैं। इंटरनेट साधनो के अभाव के कारण शहरी तथा ग्रामीण भारत में इंटरनेट का उपभोग करने वालों की संख्या में एक बड़ा अंतर है

शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या में इंटरनेट की पहुंच 64.85 फीसदी जनसंख्या तक है जबकि इसकी तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में यह प्रतिशत मात्र 20.26% है

वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़े भी इस दिशा में संकेत करते है की भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट का उपयोग कुल जनसख्या का मात्र 18.6 करोड़ ग्रामीण ही कर पाते हैं। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अनुसार ग्रामीण जनसंख्या का लगभग 70 फीसदी सक्रिय रुप से इंटरनेट का उपयोग नहीं करता है। भारत सरकार के इन आंकड़ों को आधार माना जाए तो कोविड–19 के इस दौर में स्कूली बच्चों की शिक्षा व्यवस्था का उनके व्यक्तित्व एवं विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है जिससे बच्चो में शिक्षा सम्बन्धी विकारो के उत्पन्न होने लगे है। ।

ग्रामीण विद्यालय का नाम	विद्यालय में कुल नामित बच्चो की संख्या	इंटरनेट उपयोग करने वाले बच्चो की संख्या
प्राथमिक विद्यालयए गाँव खैराबाद] सीतापुर] उ प्र	209	30 से 40
प्राथमिक विद्यालय] लाकौड़ा] उ प्र	209	40 से 50
प्राथमिक विद्यालय] हासुरी ओसनपुर गाँव] उ पर	233	20 से 25

तालिका में दिए गए परिणामो के आधार पर निष्करषत कहा जा सकता है की ग्रामीण क्षेत्रो में इंटरनेट के अभाव एवं माता पिता की जागरूकता के अभाव के चलते अधिकतर बचे शिक्षा से वंचित रह गए है

स्मार्टफोन्स के उपयोग की जानकारी के अभाव में भी ग्रामीण बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने में अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है

भारत की अधिकतर ग्रामीण आबादी कृषक मजदूर श्रमिक तथा निर्धन वर्ग की जनसंख्या के रूप में निवास करती है परंतु कोविड. 19 के इस कठिन दौर में जीविका उपार्जन के साथ. साथ महंगे स्मार्टफोन खरीद पाना या ऑनलाइन शिक्षा हेतु आवश्यक साधन जुटा पाना काफी कठिन हो गया है। इसके अलावा कोविड.19 महामारी ने शिक्षा प्रणाली में मौजूद असमानता ओं को और अधिक बढ़ा दिया है।

एक या एक से अधिक बच्चों वाले परिवारों में ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था का अत्यधिक नुकसान देहे प्रभाव हुआ है ऐसे परिवारों के लिए एक या एक से अधिक स्मार्टफोंस खरीद पाना बेहद मुश्किल हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा से वंचित रहने के कारण बच्चों के व्यवहार संबंधी कई समस्याएं भी सामने आ रही है। इस समस्या के कारण कई बच्चे अपने बाल विकास के महत्वपूर्व चरणों में से एक व्यक्तित्व संरचना के विकास क्रम में भी पिछड़ रहे है

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों में भारत में अध्ययनरत 24 करोड़ बच्चो में से 18188 पर किये सर्वे से यह ज्ञात होता है की भारत में 80 फीसदी बच्चो के पास लेपटॉप तथा २० फीसदी बच्चो के पास स्मार्टफोन्स का अभाव है। [10]

अधिकतर समय विद्यालय अथवा शिक्षा व्यवस्था की बजाए घरों में रहने के कारण उनमें चिड़चिड़ापन, आक्रामक स्वभावए अनुशासनहीनता जैसे प्रभावों को देखा जा सकता है.

पश्चिम बंगाल की एक 15 वर्षीय बालिका ने ऑनलाइन शिक्षा हेतु स्मार्टफोन के अभाव में आत्महत्या कर ली ए इसी क्रम में आसाम राज्य में भी एक बच्चे ने शिक्षा समन्धि तनाव के कारण आत्महत्य ली। [9]

निष्कर्ष

इस अध्ययन के माध्यम से मनोवैज्ञानिकों तथा मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए ग्रामीण परिवेश के बच्चो की व्यकितत्व एवं व्यवहाए समबन्धी समस्याओ को समझ पाना बेहद कारगर सिद्ध होगा। अतः कहा जा सकता है की कोविद के कठिन समय ने सर्वाधिक रूप से ग्रामीण परिवेश को प्रभावित किया है जिसके फलस्वरूप बाल विकास के विभिन्न आयाम . बालक की शिक्षा ए व्यक्तित्व ए बालक का मानसिक विकास ए संवेगात्मक विकास तथा बालको के पोषण स्तर में कमी आदि में परिवर्तन आये हैं

अतः इस बात की पुष्टि की जा सकती है की बच्चो के व्यक्तित्व विकास में माता पिता समाज तथा शिक्षा का अतयधिक प्रभाव पड़ता है। बालक अपने वातावरण से जो भी अर्जित करता है

उसका बच्चे की भावी क्रियाओ पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण बच्चो में भी माता पिता की दयनीय स्थिति और वातावण का प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।अतः बच्चो में इन व्यक्तित्व का निर्धारण करने वाले स्रोतों में संतुलन स्तापित करना अति आवश्यकहो गया है। परिवार तथा शिक्षा संगठनों को इस दिशा में कार्य किये जाने की अति आवश्यकता है ताकि शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण बालक का व्यक्तित्व विकास सुचारु रूप से हो सके।

सन्दर्भ सूची

1. https://www.un.org/development/desa/dspd/wpcontent/uploads/sites/22/2020/08/sg_policy_brief_covid-19_and_education_august_2020.pdf
2. Galton, Francis (1822-1911) British Psychologist K. Encyclopaedia of the world Psychologists, Volume-2, Global Vision Publishing House, Delhi, First Edition, 2002
3. Book Hereditary Genius. Was the first social scientific attempt to study genius and greatness, 1869. k~ http://en.wikipedia.k~ org/wikif/rancis_galton
4. https://www.unicef.org/coronavirus/how-talk-your-child-about-coronavirus-covid-2019
5. Internet and Mobile Association of India (IAMAI), 2019.
6. Robert bierstedt, The Social Order, 1970, 280-81.
7. Child Centered Risk Analysis Bihar, 2017, 4-5.
8. Buchanan C, Hughes JL. Storm and Stress. In: Levesque R.J.R. (eds) Encyclopedia of Adolescence. Springer, New York, NY, 2011.
9. https://www.bbc.com/hindi/india-53875570 (2020)
10. https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/Learning_Enhancement_0.pdf